بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 01.08.25

जलसा सालाना बर्तानिया 2025 के प्रसंग में अल्लाह की अनुकम्पाएं एवं कुछ नए बैअत करने वालों तथा जमाअत से बाहर के अतिथियों के अनुभवों का वर्णन।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (ज़हूर महीने की पहली तिथि, 1404 हश)01 अगस्त 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- गत रविवार को अल्लाह तआला की कृपा से जलसा सालाना यू.के. सम्पन्न हुआ था। ये तीन दिन बड़ी बरकतों वाले और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को दिखाने वाले दिन थे। अल्लाह तआला का बड़ा उपकार है कि उसने हमें तीन दिनों में अपनी असंख्य अनुकम्पाएं प्रदान कीं तथा जलसे को प्रत्येक दृष्टि से बरकत वाला बनाया और जलसा सकुशल सम्पन्न हुआ। अल्लाह तआला की कृपा से मौसम भी अच्छा रहा और सारे प्रोग्राम अति कुशलता पूर्वक पूरे हुए। जलसे की मूल कारवाई अर्थात भाषणों एवं अन्य प्रोग्रामों के अतिरिक्त तबलीग़ एवं ज्ञान वर्धन की दृष्टि से विभिन्न विभागों ने प्रदर्शनियों का जो आयोजन किया हुआ था, उसका भी अल्लाह तआला की कृपा से बाहर से आए हुए अतिथियों पर बड़ा अच्छा प्रभाव हुआ और अहमदियों को भी, अधिकाँश लोगों को अपनी जानकारी में वृद्धि की तौफ़ीक़ मिली।

इसी प्रकार एम.टी.ए. ने भी जलसे की कारवाई में अंतराल के समय विभिन्न ज्ञान वर्धक प्रोग्राम दिखाए तथा जानकारी दी, जिनका लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा। दूसरे देशों में बैठे हुए अहमदियों ने भी

इसे बड़ा पसन्द किया कि हमें भी अनेक नई बातें पता लगीं, और इसी प्रकार एम.टी.ए. ने इस बार विश्व के लगभग 56 देशों में 119 केन्द्रों के साथ जलसे को जोड़ा, इस सम्पर्क के माध्यम से अल्लाह तआला ने उन्हें यूं जलसा सुनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई कि वे स्वंय को वहीं उपस्थित अनुभव कर रहे थे। अतएव यह भी अल्लाह तआला के फ़ज़लों में से एक महान कृपा है जो उसने अहमदिय्या जमाअत पर की है, कि एक नए अविष्कार के द्वारा पूरे विश्व के अहमदियों को जमा कर दिया है। संयुक्त उम्मत बनने का यह दृश्य विश्व में अन्य किसी स्थान पर दिखाई नहीं देता।

इस बार सामान्य रूप से प्रबन्ध भी गत वर्षों की तुलना में, प्रायः लोगों ने ऐसा ही कहा है कि अति सुदृढ़ व्यवस्था थी, और अधिकाँश लोगों ने इसको व्यक्त किया है, यहाँ शामिल होने वालों ने भी और टी.वी. पर विभिन्न देशों में प्रोग्राम को देखने वाले लोगों ने भी यह कहा है। एक विशेष वातावरण था, और यह सब अल्लाह तआला का एक विशेष फ़ज़ल है जो हर एक को विशेष रूप से अनुभव हो रहा था कि जलसे पर अल्लाह तआला की विशिष्ट बरकतें नाज़िल हो रही हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम उसके आभारी बन्दे बनो, और जब तुम आभार प्रकट करोगे तो मैं तुम्हें अपनी और अधिक अनुकम्पाएं प्रदान करूंगा, और अधिक कृपाओं की तुम पर वर्षा करूंगा। अतः अल्लाह तआला के फ़ज्लों का और अधिक वारिस बनने के लिए शुक्रगुज़ारी की आवश्यकता है। अल्लाह तआला ने अपने बारे में यह फ़रमाया है कि निश्चय ही अल्लाह तआला आदर प्रदान करने वाला एवं जानने वाला है। जब अल्लाह तआला के लिए शुक्र का शब्द प्रयोग होता है तो वह सम्मान कर्ता के अर्थ में प्रयोग होता है। अतएव अल्लाह तआला शुक्रगुज़ारों का सम्मान करता है तथा इस सम्मान के परिणाम स्वरूप अल्लाह तआला उनको और अधिक देता चला जाता है। ये केवल बातें नहीं होनी चाहिएँ बल्कि शुक्रगुज़ारी की एक भावना होनी चाहिए, और यह भावना अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से अत्यधिक पैदा की हुई है, अल्लाह तआला इसे बढ़ाता चला जाए। यहाँ शामिल होने वालों को यह बात भी याद रखनी चाहिए कि जहां वे अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें, वहाँ काम करने वाले कारकुनों को भी धन्यवाद दें। इस बात पर आभार प्रकट करें कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने काम करने वालों के कामों में सुविधाएं पैदा कीं, उनकी दुविधाओं को दूर किया, उनके हर काम में बेहतरी पैदा की और उन्हें अधिक से अधिक लोगों की सेवा करने का सामर्थ्य प्रदान किया, और इस प्रकार सम्मिलित होने वालों के लिए सुविधाओं के अधिक अवसर प्राप्त हुए।

इस वर्ष अल्लाह तआला की कृपा से 50 हज़ार की हाज़री थी। अतः इन 50 हज़ार सम्मिलित होने वालों को आभारी होना चाहिए कि किस तरह अल्लाह तआला ने काम करने वालों के द्वारा उनके लिए सुविधाएं पैदा कीं। उन्हें ट्रांसपोर्ट, खाने तथा जलसे के प्रोग्राम सुनने की दृष्टि से कोई असुविधा नहीं हुई तथा उनकी सभी अन्य आवश्यकताएं पूरी होती रहीं। अतएव ये सारे काम जो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हुए, इस पर हमारा कोई कमाल नहीं बल्कि अल्लाह तआला का फ़ज़ल है। इस पर जहां काम करने वाले आभारी हों, वे यह भी आभार प्रकट करें कि अल्लाह तआला ने हमें तौफ़ीक़ दी, और हमारे कामों के सुन्दर परिणाम दिए, वहाँ शामिल होने वालों को भी आभारी होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने उनके लिए किस प्रकार सुविधाएं प्रदान कीं, कि असंख्य लोगों ने जो विभिन्न वर्गों तथा विभिन्न शैक्षिक स्तरों से सम्बन्ध रखते थे, सब ने रात दिन एक करके अल्लाह तआला की कृपा प्राप्ति के लिए निःस्वार्थ

डियूटियाँ दीं। इसी प्रकार केनेडा एवं आस्ट्रेलिया से भी ख़ुददाम बड़ी संख्या में आये हुए थे, उन्होंने ने जलसे से पहले भी जलसे के काम में सहायता की, जलसे के समय भी और बाद में भी वाइंड-अप में सहयोग कर रहे हैं, तो अल्लाह तआला इन सब को भी इसका सुन्दर बदला प्रदान करे।

एक हदीस ए क़ुदसी की रोशनी में हुज़ूरे अनवर ने ध्यान दिलाया कि अल्लाह तआला तो अपने बन्दों के उन कामों को इतना अधिक महत्त्व देता है, जो केवल उसके लिए किये जा रहे हों, कि फ़रमाता है कि उनके प्रति आभार प्रकट करो, और हमसे भी यही चाहता है कि हम अल्लाह तआला के बन्दों के शुक्रगुज़ार बनें ताकि फिर एक ऐसा वातावरण पैदा हो जो सम्पूर्ण रूप में धन्यवाद का वातावरण हो, जिसमें हर एक छोर से धन्यवाद हो रहा हो, और यही चीज़ हमें सदेव याद रखनी चाहिए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यहाँ आए हुए मेहमानों की जो अभिव्यक्तियाँ मुझे मिली हैं, कई कथन ऐसे हैं कि हमने कई काम करने वालों से पूछा कि आप क्या काम करते हैं? हमारा विचार था कि संभवतः वे कोई मज़दूरी इत्यादि करते होंगे, जिस तरह वे काम कर रहे हैं, किसी ने बताया कि मैं एक व्यवसायिक फ़र्म में अफ़सर हूँ, किसी ने बताया कि मैं पढ़ता हूँ, किसी ने कहा कि मैं पी.एच.डी. का विद्यार्थी हूँ, किसी ने पी.एच.डी. की डिग्री ली हुई है, तो इस तरह की भावना रखने वाले मौजूद हैं जो केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए और अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने के लिए अपने आपको पेश करते हैं। यहाँ ग़ैर भी आते हैं, विभिन्न देशों से ऐसे लोग भी आते हैं कि जिनका जमाअत से औपचारिक परिचय होता है और वे यह देखने आ रहे होते हैं कि क्या वास्तव में ये वही लोग हैं जो यह कहते हैं, और जब वे इन कारकुनों को जो भिन्न भिन्न व्यवसाय से सम्बन्ध रखने वाले होते हैं, इस प्रकार काम करते देखते हैं, और हर एक साधारण मज़दूरों वाला काम कर रहा होता है तो इनको देख कर उन पर बड़ा प्रभाव होता है, एक गुप्त तबलीग़ है जिसको वे प्रकट भी कर देते हैं। इस प्रकार जो नए आने वाले अर्थात जमाअत में शामिल होने वाले हैं अथवा वे जो पहली बार यहाँ आते हैं तो उनके भी साहस एवं उत्साह में वृद्धि होती है। वे देखते हैं कि किस तरह आदर एवं सम्मान के साथ उनका आवभगत किया जा रहा है, किस तरह इन लोगों के साथ ये लोग व्यवहार कर रहे हैं। अतएव यह अति महत्त्व पूर्ण चीज़ है और इस पर हम सबको अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए।

हुज़ूरे अनवर ने इस पृष्ठभूमि में वि भिन्न देशों से सम्बन्ध रखने वाल जमाअत से बाहर के अतिथियों तथा कुछ नए शामिल होने वालों का वर्णन फ़रमाया और ख़ुदा तआला की कृपा से जलसे की बरकतों के परिणाम स्वरूप उन पर प्रकट होने वाले दिव्य प्रभाव की चर्चा करते हुए कई ईमान वर्धक घटनाएँ बयान फरमाईं।

रोडरिक, आयरलैंड की पुलिस फ़ोर्स के असिस्टेंट कमिश्नर कहते हैं कि जलसे के दिनों में मैंने जो देखा है, वह वास्तव में एक उदहारण है, संगठन एवं अनुशासन का एक बहुमूल्य पाठ था, दस हज़ार स्वंय सेवकों का उपलब्ध होना एक अदभुत चमत्कार था। हर किसी ने लगन के साथ एकजुट होकर सेवा की।

बेल्जियम के एक मेहमान जो कि मानवाधिकार संगठन अच.आर.डब्लू.एॅफ़. के प्रतिनिधि हैं, कहते हैं कि इतने बड़े स्तर पर एक समागम की व्यवस्था, जिसमें हज़ारों लोग कई दिनों तक शामिल रहे, निःसंदेह एक मूल्यवान सफलता है। मुझे केवल प्रबन्धकीय वयवस्था ही नहीं बल्कि उसके पीछे मौजूद

नैतिक आधार भी प्रभाव पूर्ण लगा।

बुल्गारिया से एक नई बैअत करने वाली कहती हैं कि इन बरकत वाले दिनों में मैंने एक अदित्तीय रूहानी वातावरण का आभास किया और उसका अंश बनने की तौफ़ीक़ पाई। मेरा अनुभव अत्यंत विशेष रहा तथा अति प्रभावित करने वाला था कि किस प्रकार सूक्षम दृष्टि से अतिथियों की सुविधा एवं आराम का ध्यान रखा गया। जार्जिया से एक मेहमान कहते हैं कि जलसे का शान्ति पूर्ण वातावरण, सम्बोधन एवं ख़लीफ़ा के भाषण आध्यात्मिकता में आगे बढ़ाने में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। एक अरब स्वीडन से आई हैं, कहती हैं कि जलसा सालाना एक विशाल घर के सामान है जो कि पूरी फ़ैमली को अपनी छाँव में समो लेता है।

विभिन्न ईमान वर्धक अनुभूतियाँ बयान करने के बाद हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला सब मेहमानों के, जो शामिल हुए हैं और अधिक दिलों को खोले और वे अहमदिय्यत और वास्तविक इसलाम को समझने वाले एवं ज़माने के इमाम को मानने वाले भी बनें। नए शामिल होने वालों को भी ईमान और श्रृद्धा में बढ़ाता रहे, इसी तरह हर अहमदी को भी तौफ़ीक़ दे कि जलसे पर जो उन्होंने प्रोग्राम देखे, सुने, उनके अनुसार अमल करने वाले हों, उन्हें अपने जीवन का अंग बनाने वाले हों, दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाले हों और यह भावना सदेव क़ायम रहे। जलसे की बरकतों से हर अहमदी सदेव हिस्सा लेता रहे और अपनी चेतना एवं अपने आस पास के सुधार के लिए भी भरसक प्रयास करने वाले हों।

हुज़ूरे अनवर ने प्रेस इत्यादि की रिपोर्ट भी संक्षेप में बयान फ़रमाई। जमाअती प्रेस एंड मीडिया सेक्शन और उसके अंतर्गत लगभग 49 वेबसाइट, प्रिंट मीडिया, समाचार पत्रों में 17 लेखों, रेडियो पर 25 प्रोग्रामों तथा टी.वी. एवं सोशल मीडिया के माध्यम से अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सबको मिलाया जाए तो 100 मिलियन लोगों तक यह ख़बर पहुँची।

एम.टी.ए. अफ़्रीक़ा के विभिन्न चेनलों पर जलसा सालाना के प्रसारण देखने के बाद 50 से अधिक लोगों ने बैअत भी की। जलसा सालाना की 22 नैशनल एवं रीजनल टी.वी. चैनल्स पर 304 घंटे का प्रसारण हुआ, 16 मिलियन तक इसके द्वारा सन्देश पहुंचा, और कहते हैं कि मीडिया आउटलेट्स अन्य साधनों से 47 समाचार प्रसारित हुए और इसके द्वारा 150 मिलियन तक पैग़ाम पहुंचा।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने मुकर्रम अब्दुल करीम जमाल जौदा साहब ग़ाज़ा फ़लिस्तीन शहीद का सदवर्णन किया और जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई और मरहूम की मगफ़िरत एवं दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब